इंफ्रा-चेक

○ सुजीत गुप्ता

अंडरग्राउंड मेट्रो मीठी नदी के नीचे से गुजरेगी। बीकेसी से धरावी के बीच मीठी नदी के नीचे चल रहे टनल निर्माण का काम पूरा हो गया है। इसी के साथ ही मीठी नदी के नीचे अंडरग्राउंड मेट्रो आरपार हो गई है। इस पैकेज का करीब ९० फीसदी काम पूरा हो गया है। बीकेसी से धारावी के बीच डेढ़ किमी मार्ग में से करीब एक किमी टनल का काम पूरा हो चुका है जबकि बाकी बचे ५ मीटर टनल का काम अप्रैल तक पूरा करने का लक्ष्य मुंबई मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने रखा है।

अंडरग्राउंड मेट्रो का ८० फीसदी टनल पूरा

कफ परेड में होते हैं रोजाना १५० धमाके

अंडरग्राउंड मेट्रो-१ का कफ परेड स्टेशन मेट्रो के बड़े स्टेशनों में से एक है। जब मुंबई में अंडरग्राउंड मेट्रो ट्रेन के परिचालन की शुरुआत होगी तब कफ परेड स्टेशन अंडर ग्राउंड मेट्रो का अंतिम स्टेशन होगा। कफ परेड स्टेशन को नेटम तकनीक से तैयार किया गया है। नेटम तकनीक के तहत मेट्रो टनल खुदाई के लिए रोजाना १५० धमाके होते हैं। धमाके के लिए किसी बारूद का इस्तेमाल नहीं किया जाता है बल्कि पेट्रोलियम जेली के जरिए दीवार और जमीन में छेदकर टनल और स्टेशन को आकार दिया गया है।

बता दें कि कल 'दोपहर का सामना' संवाददाता ने कफ परेड मेट्रो स्टेशन का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने जमीन से २२ मीटर नीचे मुंबई की कोख में बन रहे मेट्रो टनल की खुदाई व मेट्रो स्टेशन के निर्माण का जायजा लिया। कफ परेड मेट्रो स्टेशन के टनल निर्माण के लिए पेट्रोलियम जेल का इस्तेमाल कर चट्टानों को तोड़ा जा रहा है। मेट्रो के एक इंजीनियर ने बताया कि चट्टान में ब्लास्ट करने के लिए ८ से ९ मीटर ड्रिलिंग की जाती है, इसके बाद पेट्रोलियम जेल की मदद से धमाका कर पत्थरों को तोड़ा जाता है, जबकि जमीन की खुदाई के लिए १ मीटर गहरी ड्रिल करने के बाद पेट्रोलियम जेल से धमाका कर मेट्रो स्टेशन की खुदाई की जाती है। गौरतलब हो कि वर्तमान में कफ परेड से हुतात्मा चौक के बीच पैकेज १ के तहत ७० फीसदी अंडरग्राउंड मेट्रो का काम पूरा हो चुका है।

सुरक्षा ही जीवन रक्षा

कफ परेड मेट्रो स्टेशन पर अंडरग्राउंड टनल के निर्माण से पहले काम करनेवाले मजदूरों की सुरक्षा का पूरा ख्याल रखा जाता है। टनल व अन्य मेट्रो स्टेशन का काम शुरू करने से पहले उन्हें हेलमेट जैकेट, विशेष जूट आदि पहनाए जाते हैं। काम की शुरुआत से पहले उनकी एंट्री करवाई जाती है ताकि काम के दौरान कोई मजदूर वापस न आए तो उसका पता चले।

सेल्फ रेस्क्यू किट

कहा जाता है कि इंसान ऑक्सीजन लेने के बाद कार्बन डाईऑक्साइड छोड़ता है, लेकिन ऐसा नहीं है इंसान जब कार्बन डाईऑक्साइड अपने शरीर से बाहर निकालता है तो उसके साथ ऑक्सीजन की कुछ मात्रा भी बाहर निकलती है, जो यहां काम करनेवाले मजदूरों के लिए कभी भी ज़ीवन दान साबित हो सकती है। ऐसा हम इसलिए कह रहे है क्योंकि यहां पर सेल्फ रेस्क्यू किट की व्यवस्था की गई है। यह एक ऐसा किट है, जो आपातकालीन स्थिति में टनल खुदाई के दौरान चट्टान गिरने या फिर कोई हादसा होने पर फंसे व्यक्ति को ऑक्सिजन देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

किट की खासियत

इस किट की खासियत यह है कि इंसान फूंक मारकर अपने शरीर से निकलनेवाले कार्बन डाईऑक्साइड को रिफ्रेश कर ऑक्सीजन में तब्दील कर देता है। कोई हादसा हो जाने पर यदि मजदूर टनल में फंस जाए तो इस किट की मदद से ऑक्सीजन लेकर वह ३० मिनट तक ऑक्सीजन ले सकता है। आमतौर पर इंसान को जिंदा रहने के लिए २१.९ पीपीएम ऑक्सीजन की जरूरत होती है। जमीन के नीचे ऑक्सीजन का प्रतिशत २० पीपी तक पहुंच जाता है।

पाताल में १२ घंटे की ड्यूटी

अंडरग्राउंड टनल के अंदर काम करनेवाले मजदूरों का जीवन भी आम इंसान की तुलना में बड़ा चैलेंजिंग होता है। टनल में काम करनेवाले मजदूर रोजाना अपने जीवन के १२ घंटे काम के दौरान टनल में बिताते हैं।